A–1227

Total Pages : 4 **Roll No. .....**

BASL (N)-102

(संस्कृत गद्यकाव्य एवं उपन्यास)

2nd Semester Examination, Session December 2024

Time : 2:00 Hrs. Max. Marks : 70

नोट :– यह प्रश्न-पत्र सत्तर (70) अंकों का है, जो दो (02) खण्डों 'क' तथा 'ख' में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। ***परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर-पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।***

खण्ड–क

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 2×19=38

नोट :– खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **दो** (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. गद्यकाव्य के उपन्यास शिवराजविजय पर प्रकाश डालिए।

2. बाणभट्ट के विषय में परिचय दीजिए।

3. शुकनासोपदेश की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए।

4. हितोपदेश के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए।

5. निम्नलिखित की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

आलोकयतु तावत् कल्याणाभिनिवेशो लक्ष्मीमेव प्रथमम्। इयं हि खड्गमण्ड-लोत्पल-वन-विभ्रम-भ्रमरी लक्षमी: क्षीरसागरात् पारिजातपल्लवेभ्यो रागम्, इन्दुशकलादे-कान्तवक्रताम्, उच्चै:श्रवसश्चलताम्, कालकूटान्मोहनशक्तिम्, मदिराया मदम्, कौस्तु-भमणेर्नष्ठुर्य्यम्, इत्येतानि सह्रास-पिरचयवशाद्विरविनोदचिलानि गृहीत्वेवोद्गता।

नहह्योवंविधमपरिचितमिह जगति किञ्चिदस्ति, यथेयमनार्यो। लब्धापि खलु दुखेन परिपाल्यते। दृढगुण-सन्दान-निष्पन्दीकृतापि नश्यति।

अथवा

एवंविधयापि चानया दुराचारया कथमपि दैववशेन परिगृहीता विक्लवा भवन्ति राजान:, सर्वाविनयाधिष्ठानताञ्च गच्छन्ति। तथाहि-अभिषेकसमय एव चेतो मङ्गलक-लशजलैरिव प्रक्षाल्यते दाक्षिण्यम्, अग्निकार्य्यधूमेनेव मलिनीकियते हृदयम्, पुरोहित-कुशाग्र-सम्मार्जनीभिरिवापह्रियते क्षान्ति:, उष्णीषपट्ट-बन्धेनेवाच्छाद्यते जरागमनस्मर णम्र, आतपत्रमण्डलेनेवापसार्य्यंते परलोकदर्शनम्, चामरपवनैरिवापलियते सत्यवादिता, वेत्र-दण्डैरिवोत्सार्य्यन्ते गुणा:, जयशब्दकलकलरवैरिव तिरस्क्रियन्ते साधुवादा: ध्वजपटपल्लवैरिव परामृश्यते यश:।

खण्ड–ख

लघु उत्तरीय प्रश्न 4×8=32

नोट :– खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **चार** (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्।

   इस श्लोक को पूरित करते हुए व्याख्या कीजिए–

2. शिवराजविजय में वर्णित रागमालागीत पर प्रकाश डालिए।

3. कादम्बरी में रससौन्दर्य का वर्णन कीजिए।

4. वेतालपञ्चविंशतिका का परिचय विस्तार से दीजिए।

5. इस गद्यांश की व्याख्या कीजिए–

   अहो! चिररात्राय सुप्तोऽहम्, स्वप्नजालपरतन्त्रेणैव महान् पुण्यमयः समयोऽतिवाहितः, सन्ध्योपासन-समयोऽयमस्मद्गुरुचरणानाम्, तत्सपदि अवचिनोमि कुसुमानि इति चिन्तयन् कदलीदलमेकमाकुञ्च्य, तृणशकलैः सन्धाय, पुटकं विधाय, पुष्पावचयं कर्तुमारेभे। बटुरसौ आकृत्या सुन्दरः, वर्णेनगौरः, जटाभिर्ब्रह्मचारी, षोडशवर्षदेशीयः, कम्बुकण्ठः, आयतललाट, सुबाहु-वयसा विशाललोचनश्चाऽऽसीत्।

6. इस गद्यांश की व्याख्या कीजिए–

यावदेष ब्रह्मचारी बटुरलिपुञ्जमुख्य कुसुमकोरकानवचिनोति, तावत् तस्यैव सतीर्थ्योऽपरस्तत्समानवयाः कस्तूरिका–रेणु–रूषित इव श्यामः, चन्दन–चर्चित–भालः, कर्पूरागुरु–क्षोद–च्छुरित–वक्षो–बाहु–दण्डः, 'सुगन्ध–पटलैरुन्निद्रयन्निव निद्रा–मन्थराणि कोरक निकुरम्बकान्तराल–सुप्तानि मिलिन्द–वृदानि झटिति समुपसृत्य निवारयन् गौरबटुमेवमवादीत्।

7. सिंहासनद्वात्रिंशिका का परिचय दीजिए।

8. संस्कृत के प्रमुख गद्यकाव्यों एवं गद्यकारों पर प्रकाश डालिए।

****